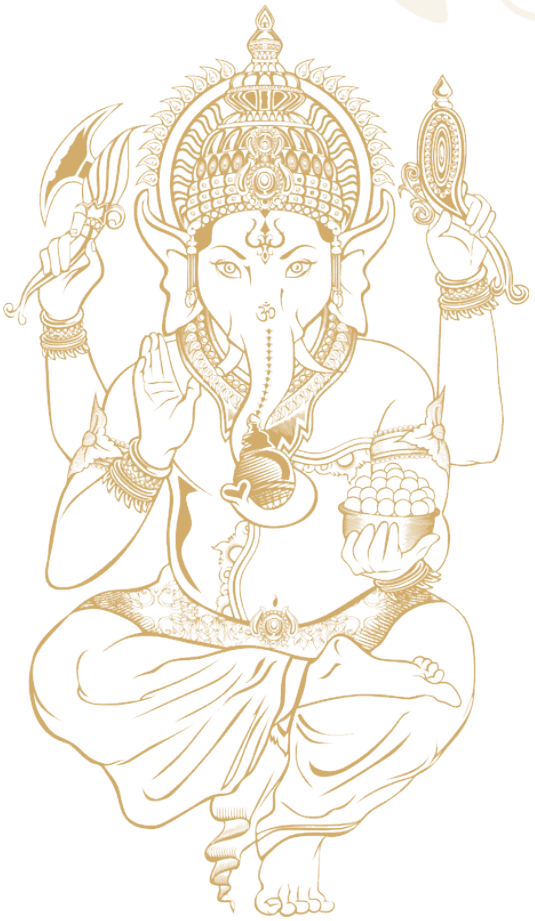

Mr.

12 Mar 2020

12:01 PM

Jammu

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119634401**

तिथि 12/03/2020 **समय** 12:01:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Jammu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:08:04
अक्षांश 32:42:00 उत्तर **रेखांश** 74:52:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:30:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	22:51:57 घं
वेलान्तर	00:09:39 घं
सूर्योदय	06:44:41 घं
सूर्यास्त	18:36:13 घं
चैत्रादि संवत	2076
शक संवत	1941
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	4
नक्षत्र	चित्रा
योग	ध्रुव
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	री-रीतेश
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

मंगल 1वर्ष 4मा 19दि

राहु

31/07/2021
01/08/2039

राहु	12/04/2024
गुरु	06/09/2026
शनि	13/07/2029
बुध	30/01/2032
केतु	17/02/2033
शुक्र	17/02/2036
सूर्य	11/01/2037
चन्द्र	13/07/2038
मंगल	01/08/2039

योगिनी

मंगला 0वर्ष 2मा 11दि

भ्रामरी

24/05/2025
24/05/2029

भ्रामरी	02/11/2025
भद्रिका	24/05/2026
उल्का	22/01/2027
सिद्धा	02/11/2027
संकटा	22/09/2028
मंगला	02/11/2028
पिंगला	22/01/2029
धान्या	24/05/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			05:04:34	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			28:00:39	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.57	आत्मा	पितृ	विपत
चंद्र			04:01:40	तुला	चित्रा	4	मंगल	शुक्र	सम राशि	1.13	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			22:58:56	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	मित्र राशि	1.20	भ्रातृ	भ्रातृ	वध
बुध			04:18:10	कुंभ	धनिष्ठा	4	मंगल	शुक्र	सम राशि	0.85	ज्ञाति	ज्ञाति	जन्म
गुरु			27:23:05	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	स्वराशि	1.31	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र			13:35:12	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.12	मातृ	कलत्र	वध
शनि			05:04:00	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	शनि	स्वराशि	1.29	पुत्र	आयु	मित्र
राहु	व		10:45:32	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	उच्च राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		10:45:32	धनु	मूल	4	केतु	शनि	उच्च राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

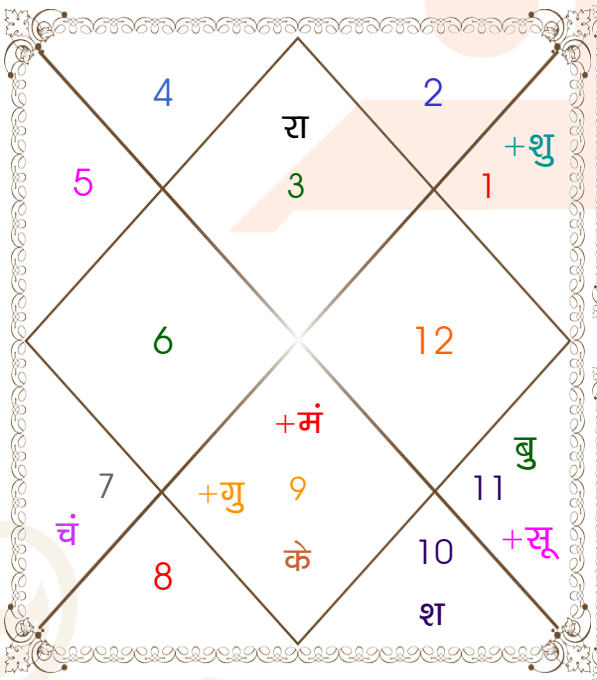

चन्द्र कुंडली

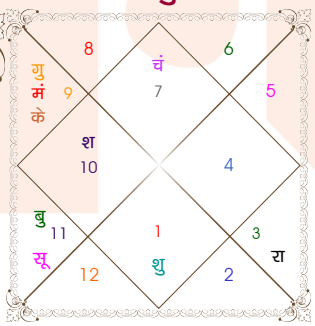

नवमांश कुंडली

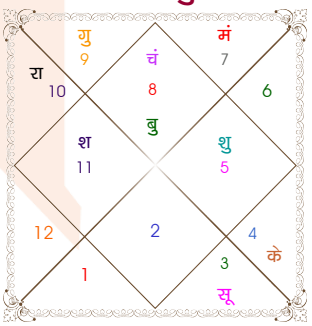

सर्वाष्टकवर्ग

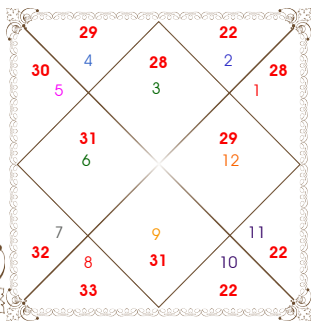

दशमांश कुंडली

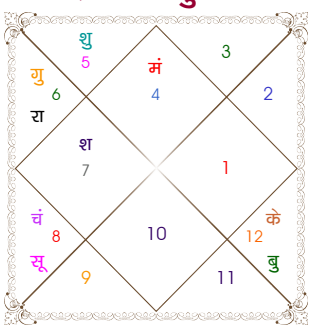

नक्षत्रफल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "रि" या "री" अक्षर से शुरू होगा।

आप स्वभाव से ही धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा रखेंगे। देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप समय समय पर इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। आप स्त्री पुत्र सहित हमेशा सन्तुष्ट रहने वाली प्रकृति के पुरूष होंगे। अनावश्यक इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। आप हमेशा धनधान्य तथा ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

आप हमेशा विभिन्न प्रकार की वेशभूषा को धारण करने के प्रति रूचिशील रहेंगे तथा गले में भी माला आदि को धारण करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होगी एवं शरीर भी सौन्दर्य से युक्त रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आप अपने मन के किसी भी भेद को हमेशा अपने ही हृदय में गुप्त रखेंगे तथा किसी अन्यजन को उस के बारे में कुछ भी नहीं बताएंगे। आपकी यह प्रवृति स्वाभाविक होगी तथा आजीवन इस प्रवृति का पालन करेंगे। समाज के लोगों में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा अतः सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका अन्य जनों के प्रति भी अनुराग का भाव रहेगा तथा उनसे मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अत्यन्त ही पराक्रमी एवं प्रतापी पुरूष होंगे तथा अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित करने तथा कुचलने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। शत्रुपक्ष आपसे इतना भयभीत रहेगा कि आपके विरूद्ध मुहं खोलने का उनमें साहस नहीं रहेगा। नीति शास्त्र के आप महान विद्वान होंगे तथा नीति संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने में अत्यन्त ही निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। शास्त्रों के प्रति भी आपका सम्मान का भाव रहेगा तथा अपनी अद्भुत बुद्धि से सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञानार्जन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आपका शरीर तथा मुख देखने में सुन्दर रहेगा। आपकी आखें बड़ी तथा नाक ऊँची होगी। आपके पास वाहनों की बहुलता रहेगी। स्त्री वर्ग के प्रति आपमें आकर्षण की प्रबलता रहेगी तथा इनसे आपके घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे। आपको वाहन के अतिरिक्त भूमि आदि जायदाद से भी बल एवं लाभ प्राप्त होगा। शुद्धता तथा पवित्रता के प्रति आप का विशेष ध्यान रहेगा। आप पराक्रम के ज्ञाता होंगे तथा सम्पूर्ण समाज में आपका उच्च प्रभाव एवं आकर्षण रहेगा। कार्यों को सम्पन्न करने में आप अत्यन्त ही चतुर एवं कुशल होंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहरी श्रद्धा होगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी भक्ति में सदैव तत्पर रहेंगे। आप अतुल धन तथा ऐश्वर्य से हमेशा सुशोभित रहेंगे। इनका आपके पास अभाव नहीं रहेगा। स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे तथा अधिकांश कार्य उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। धन धान्यादि के संग्रह करने में भी आपकी प्रवृति संलग्न रहेगी

तथा भाई बन्धुओं का आप उपकार करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप श्रेष्ठ एवं भद्र पुरूषों तथा समाज सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहेंगे तथा विद्धता एवं पवित्रता से हमेशा सुशोभित रहेंगे। भ्रमण करना तथा यात्राएं आदि के प्रति आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इन्हीं पर व्यतीत करेंगे। वस्तुओं को खरीदने तथा बेचने के कार्य में आप हमेशा निपुण रहेंगे। आप अपने समस्त बन्धु वर्ग का उपकार एवं सहायता करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपकी उपेक्षा होगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य का गुण विद्यमान रहेगा तथा अधिकांश कार्यो को आप धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक न्यायप्रिय व्यक्ति होगे तथा न्याय के प्रति पूर्ण आस्था रखेंगे। आपकी इस प्रवृति को ध्यान में रखते हुए अन्य लोग अपने आपसी विवादों में आपको पंच या मध्यस्थ नियुक्त करेंगे। साथ ही आपका भाग्योदय भी देर से होगा एवं संतति संख्या भी अल्प ही रहेगी।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका कद मध्यम रहेगा। उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में अतीव चतुराई का प्रदर्शन करेंगे एवं उनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही बंधुवर्ग को आप हमेशा कुछ न कुछ सहायता प्रदान करते रहेंगे। परन्तु कभी कभी आप अधिक तथा व्यर्थ की बातें भी बोलने लगेगे। अतः लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। ज्योतिषशास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्र विद्या के आप प्रसिद्ध विद्वान हो सकते है। इसके अतिरिक्त संबंधी बन्धु तथा सेवकों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वो।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।

यदा कदा आप गलत स्थान पर या अनुचित समय पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे। जिससे आप दुःख को प्राप्त करेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे जिससे अन्य लोगों के ऊपर आपके प्रभाव की वृद्धि होगी। साथ ही आप एक दयालु तथा कृपालु व्यक्ति होंगे तथा सबके प्रति अपनी इस भावना को बनाए रखेंगे। आपकी आखें चंचलता से युक्त रहेंगी। धनागमन आपके पास अस्थिर मात्रा में रहेगा। कभी तो अतिशय धन प्राप्ति होगी तो कभी कुछ नहीं मिलेगा। अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्ति की अनुभूति करेंगे। घर के अन्दर आप बलशाली होंगे परन्तु घर से बाहर अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगे। मित्र वर्ग से आपका पूर्ण सहयोग तथा प्रेम का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर परदेश या विदेश में भी निवास कर सकते हैं।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने जीवन में वाहनादि से सदैव सम्पूर्ण रहेंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में सर्वथा विद्यमान रहेगा। स्त्रीवर्ग से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा मित्र एवं बंधु वर्ग के भी स्नेही होंगे।

वृषतुरंग विकमविकमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बातों को कहने की होगी। आपके हृदय में दया एवं करूणा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आप एक साहसी पुरूष होंगेतथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृति शीघ्र ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित होने की भी रहेगी। आप अपनी कार्य सिद्धि के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे। शारीरिक बल से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी कभी आपकी विवाद की प्रवृति भी रहेगी तथा लोगों से आपका विरोध भी रहेगा। अतः संयम पूर्वक अन्य जनों से सम्पर्क करना चाहिए।

आप प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी जीवन काल में पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपकी मुखाकृति भी सामान्य आकर्षक रहेगी। आप अपनी भाषा में कभी कभी ऐसे शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे सुनने वाला आपसे अप्रसन्नता का भाव प्रकट करेगा। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी कोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अपने समस्त कार्यों को स्वच्छन्द तथा स्वतंत्रतापूर्वक सम्पन्न करने के प्रति रूचिशील रहेंगे अपने कार्यों में दूसरों का हस्तक्षेप आपको रूचिकर नहीं लगेगा। साथ ही धनधान्यादि संग्रह करने में भी आपकी प्रवृति रहेगी। अच्छी बातों तथा गुणों को आप शीघ्र ही ग्रहण करेंगे। धन तथा वैभव से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे परन्तु आप अपने ही मुहं से अपनी प्रशंसा करेंगे अतः अन्य जन इसे पसन्द नहीं करेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो

कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए ।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता इत्यादि अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, चांदी, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध आदि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।